# भैंसों में गर्मी/ मद/ ताव में आने के लक्षण

**डॉ. अशवनी सेनी**
**के. भैंस अं. स., उप–परीसर , नाभा -147201**

भैंसों से हर साल दूध एवं बच्चा मिलता रहे, तभी पशुपालन एक लाभकारी व्यवसाय एवं रोजगार का माध्यम बन सकता है| भैंसों का न बोलना या शांत मद (अथवा गूंगा-आमा) पशुपालको एवं किसानों के लिए आर्थिक रूप से अत्यंत नुकसानदायक है, जिसके कारण से भैंस के ब्याने का अंतराल काफी बढ़ जाता है| पशु पालकों को भैंस के मद चक्कर तथा गर्मी के लक्षण एवं पहचान की जानकारी न होने से वह पशु समय पर ग्याभिन अथवा नए दूध नहीं करवा पाता है|

## I. भैंस का मद चक्कर,गर्मी में आने की उम्र, अवधि एवं वजन

भैंसे आमतौर पर 3 से 4 वर्ष की उम्र में गर्मी के लक्षण दिखाने लगती हैं| योवनावस्था प्राप्त करने पर कटटडीयां गर्मी में आने लगती हैं, लेकिन उन्हें गर्भित करवाने के लिए शरीर का वजन कम से कम 300 से 350 सौ किलोग्राम होना चाहिए| अच्छी चराई करने से यह वजन कटटडीयां 3 साल में पूरा कर लेती हैं| ब्याने के बाद भी पशु को प्रसव के 45 से 75 दिन के बीच गर्भित करवाना चाहिए|

***अवधि एवं समय***

आमतौर पर भैंस एक निश्चित समय यानी के 20 से 22 दिन के अंतर पर लगातार गर्मी या मद में आती रहती है| एक मद से दूसरे मद के समय को मद चक्कर कहते हैं| भैंसों में यह ताव या मद चक्कर आमतौर पर 21 दिन का होता है, किंतु यह कम से कम 18 दिन एवं अधिक से अधिक 27 दिन का भी हो सकता है| 3 से 4 साल तक गर्मी के लक्षण न दिखाना पशुपालक के लिए सरदर्दी बन जाता है| प्रजनन रोगों की अवस्था में ताव चक्कर का समय अधिक या कम भी हो सकता है| इसलिए पशुपालकों को अपने पास प्रजनन संबंधी एक विवरण पुस्तिका के गर्मी में आने की तिथि एवं समय लिखना चाहिए, ताकि एक ताव चक्कर से दूसरे ताव चक्कर की तारीख से सही ताव चक्कर की अवधि या समय का पता लगाया जा सकता है|

***गर्भित करने का उचित समय***

सामान्य रूप से गर्मी या ताव चक्कर 21 दिन का होता है| मद में आने पर भैंस लगभग 18 से 36 घंटे औसतन गर्मी में रहती है| भैंस प्रायः देर शाम या रात से अति सुबह तक लगभग 12 से 24 घंटे तक गर्मी में रहती है| अधिक गर्मी के मौसम में भैंस का ताव समय 6 से 8 घंटे का भी हो सकता है| औसतन अवधि 18 घंटे तक रहती है| प्रायः भैंस को गर्मी के लक्षण दिखाने से 10 से 12 घंटे के बाद या गर्मी के मध्य में गर्भाधान करवाना चाहिए| जो भैंस शाम या रात को गर्मी में आए उसे अगले दिन सुबह गर्भित करवाना चाहिए| जो भैंस सुबह गर्मी में आए उसी दिन शाम को गर्भित करवाएं|अच्छे परिणाम के लिए कृत्रिम गर्भाधान 12 घंटे के अंतर पर करवाएं| जिन पशुओं में गर्मी एक दिन से अधिक रहती हैं उनको दूसरे दिन दुबारा गर्भाधान करवाना चाहिए| गर्भित न होने पर भैंस 19 से 23 दिन बाद दोबारा गर्मी में आ जाती है |

## II. गर्मी/ताव/हीट या मद के भैंसों में लक्षण

1. भैंस का बार-बार रंभाना/बोलना|
2. पशु चंचल हो जाता है तथा दूसरे पशु को अपने ऊपर चढ़ने देता है, व कभी-कभी दूसरों पर चढ़ता है|
3. पशु का अस्थाई रूप से दूध उत्पादन कम हो जाता है और खाना-पीना भी कुछ कम कर देता है|

4. बार बार पशु का पिशाब करना|
5. योनि या भगोष्ट सहलाने पर भैंस का चुप खड़े रहना, पूँछ उठाना, बार-बार हिलाना या थोड़ी ऊपर उठाकर रखना|
6. योनिद्वार से पारदर्शी, चमकीला, लेसदार, गाढा तार/द्रव्य या स्राव का लटकना या भैंस की पूंछ से चिपका होना|
7. योनि की अंदरूनी परत का लाल,गुलाबी हो जाना या हल्का सुजा होना|
8. गर्मी में आने के तीन चार दिन पहले डोका करना या थनों में दूध का आना|
9. पशु का चिल्लाना, दौड़ना एवं भागने की कोशिश करना|
10. कान खड़े करना, चौकन्ना होना, आंखों में विशेष चमक होना व अन्य पशुओं से अलग होना|

## III. गर्मी के लक्षणों की विषमताएं एवम विशेषताएँ

भैंस में गर्मी के लक्षणों की तीव्रता गाय की अपेक्षाकृत कम होती है| इसलिए सभी लक्षण अधिकांश भैंसों में प्रकट नहीं होते| ज्यादातर लक्षण रात और सुबह-शाम के समय दिखाई देते हैं तथा कभी-कभी साफतौर पर दिखाई नहीं पड़ते| जिस कारण किसान लक्षण पहचान न कर पाने के कारण भैंस को ग्याभिन नहीं करवा पाते|

गर्मी के लक्षणों में कोई एक लक्षण बार-बार रंभाना, योनि मार्ग से रस्सी की भांति तार का लटकना या गिरना या डोका करने पर डॉक्टरी जांच करवा कर वीर्य का टीका लगवा देना चाहिए| भैंस के रंभाने या अन्य लक्षणों के इंतजार में देर होने पर गर्मी तथा गर्भाधान का समय निकल जाता है|

गर्मी के लक्षणों को ठीक से सुनिश्चित नहीं कर पाने पर लक्षण दिखाई देने की तारीख नोट कर लें तथा फिर से लक्षण 19 से 24 दिन बाद अगर नजर आए तो भैंस को गर्भित जरूर करवाएं|

एक ब्यांत अथवा मद चक्कर में विशेष लक्षण दिखाने वाली भैंसों का अगली बार भी मद के वही लक्षण दिखाना जरूरी नहीं है| तार या योनि स्राव भरपेट चारा खा कर बैठने वाली भैंसों में देखना चाहिए, क्योंकि पेट के दबाव के कारण यह योनि तार बाहर निकलकर पुंछ या पुट्ठे पर चिपका हो सकता है|

## IV. डॉक्टरी जांच का फायदा

1. मद मे होने की सही स्थिति का पता लगाया जा सकता है|
2. संक्रमण में अन्य रोग का निदान एवं समुचित इलाज हो सकता है|
3. झोंटों द्वारा सूंघ कर छोड़ देने की स्थिति में भैंसों में गर्मी का पता न लग पाने की स्थिति में पशु चिकित्सक द्वारा भैंस की जांच उपयोगी साबित हो सकती है|
4. जननांग की जांच से भैंस के मद में ना होने पर मद की संभावित स्थिति का पता लगाया जा सकता है|
5. गर्मी की पहचान सही समय पर होने से गर्भधारण की दर 20 से 25% तक बढ़ सकती है|

## V. गर्मी के लक्षणों की पहचान ना होने के नुकसान

1. सही समय पर पशुओं का गर्भधारण नहीं हो पाना|
2. ब्यांत के अंतराल का बढ़ जाना|
3. पशुओं अथवा भैंसों के खानपान एवं प्रबंधन का खर्च बढ़ जाना|
4. बयाने की स्थिति में न आने से दूध तथा कट्टे एवं कटडियो का न मिल पाना|

## VI. गर्मी के लक्षण ढूंढने यह पता लगाने का समय

भैंस देर शाम, रात, अति सुबह अथवा प्रातः काल में गर्मी में आती है| रात-दिन व्यक्तिगत ध्यान देने पर या कम से कम दिन में दो बार सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय, ऋतु-मती भैंसों में गर्मी के लक्षणों का पता

अवश्य लगाया जा सकता है| इसके लिए नसबंदी किए हुए झोंटे की मदद ली जा सकती है

## VII. मद या गर्मी के लक्षणों के आधार पर भैंसों का वर्गीकरण

गर्मी के लक्षणों में पशु का व्यवहार तथा प्रजनन अंगों में आए परिवर्तन के आधार पर भैंसों या पशुओं को तीन श्रेणियों या वर्गों में बांटा जा सकता है :

1. कड़ी या अच्छी गर्मी वाली भैंसे ( स्टैंडिंग-हीट )
2. बीच की गर्मी वाले भैंसे
3. चुप्पी या गूंगा-आमा वाली भैंसे ( साइलेंट-हीट )

### 1. *कड़ी या अच्छी गर्मी वाली भैंसे*

इन भैंसों में गर्मी के लक्षण बहुत स्पष्ट होते हैं| जब गर्म पशु दूसरे पशु को अपने ऊपर चढ़ने से रोकता या हटाता नहीं है, बल्कि दूसरे पशु को अपने ऊपर चढ़ने देता है, इस अवस्था को स्थिर-रितुमती (स्टैंडिंग-हीट) कहते हैं जिसमें पशु की बाहरी योनि में एक विशेष चिकनाहट, फुलाव या लचीलापन आ जाता है, तथा योनि से शीशे जैसा पारदर्शक, रस्सी जैसा गाढा योनि-द्रव निकलता है तथा पशु के बैठने पर यह द्रव साफ दिखाई पड़ता है|

### 2. *बीच की गर्मी वाली भैंसे*

इन भैंसों में गर्मी के लक्षण साधारण किस्म के होते हैं|

### 3. *चुप्पी या गूंगा-आमा वाली भैंसे*

इन भैंसों में गर्मी के लक्षण स्पष्ट नहीं होते हैं | भैंसों में साल भर रितु-मति रहने के बावजूद, मौसम का प्रभाव गर्मी में अधिक दिखाई पड़ता है| भारतीय जलवायु में अधिकतर भैंस चुप्पी किस्म की होती है|

## VIII. भैंसों में गर्मी अथवा रितुकाल के लक्षण

| क्रम-संख्या | लक्षण | प्रारंभिक | मध्यकाल | अंतिम |
|---|---|---|---|---|
| 1. | खाने में इच्छा : | सामान्य | कम | सामान्य |
| 2. | रंभाना/ चिल्लाना: | कभी-कभी | रह-रहकर | सामान्य |
| 3. | उद्विग्नता/ बेचैनी: | बेचैनी, आवास से बाहर दौड़ना | बेचैनी, आवास से बाहर दौड़ना | आवास में लौटना |
| 4. | योनि द्वार/भगोष्ठ | हल्की सूजन | सूजन | सामान्य |
| 5. | योनि मार्ग की श्लेष्मा झिल्ली /परत | हल्की गुलाबी | लाल गुलाबी | हल्की गुलाबी |
| 6. | मूत्रत्याग | कभी-कभी | रह-रहकर(5 मिनट में 3-5 बार) | सामान्य |
| 7. | नर सांड का मादा पर मुंह या थूथन रखना | रखता है | अधिकतर | 40% मामलों में |
| 8. | कृत्रिम गर्भाधान का उचित समय | 0-8 घंटे | 12-18 घंटे | 24 घंटे |
| 9. | उपयोगिता | कम उपयोगी | अत्यंत उपयोगी | कम उपयोगी |